रिच डैड
पुअर डैड

बेस्ट
व्यक्तिगत
वित्त-प्रबंधन
की #1 पुस्तक!
सेलर

पैसों के बारे में अमीर लोग अपने बच्चों को ऐसा क्या सिखाते हैं,
जो ग़रीब और मध्यम वर्ग के माता-पिता नहीं सिखाते!

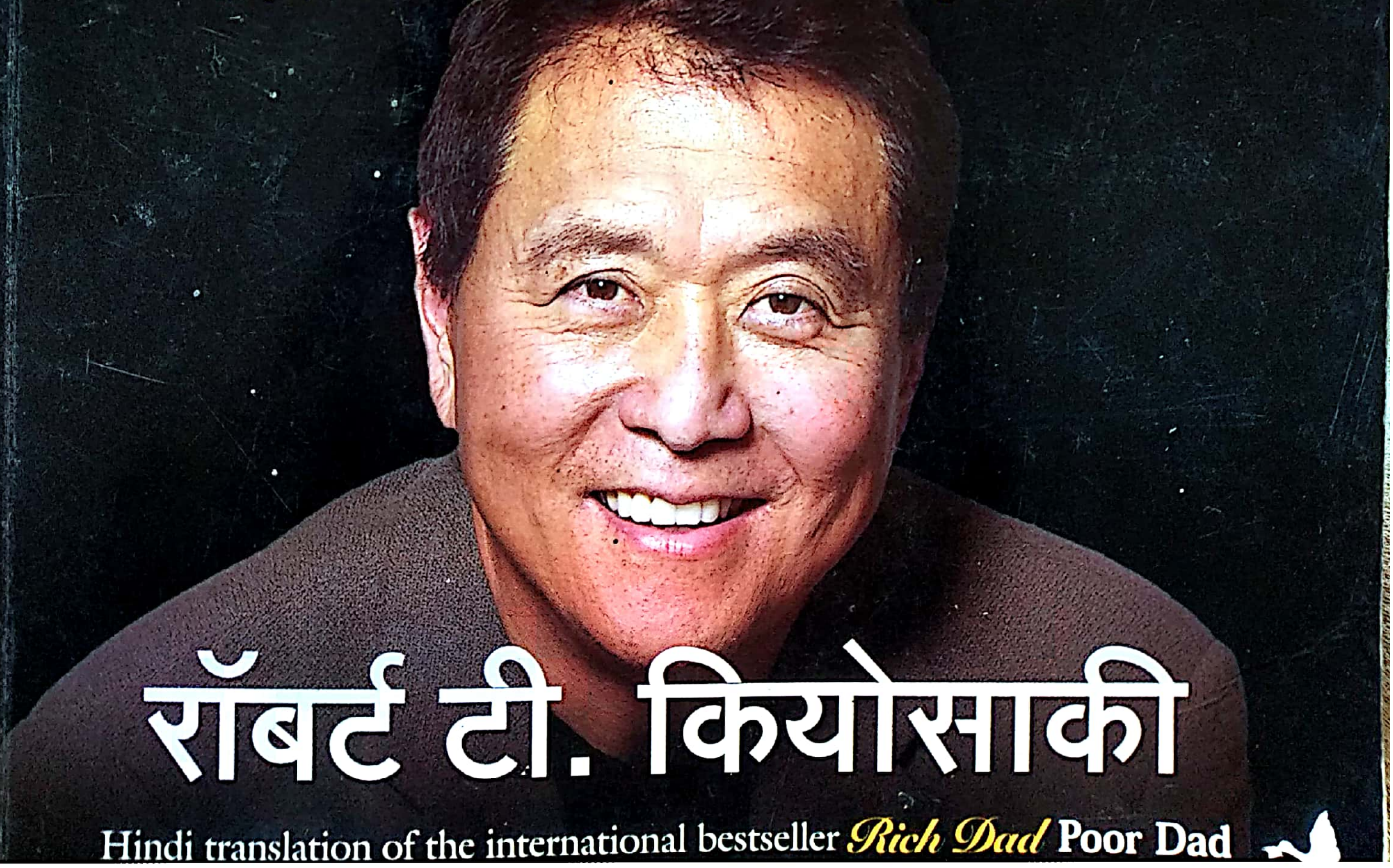

रॉबर्ट टी. कियोसाकी

Hindi translation of the international bestseller *Rich Dad* **Poor Dad**

VISIT…

LANZAROTE
Caliente.COM

रिच
डैड
पुअर डैड

पैसों के बारे में अमीर लोग अपने बच्चों को ऐसा क्या सिखाते हैं,
जो ग़रीब और मध्यम वर्ग के माता-पिता नहीं सिखाते!

रॉबर्ट टी. कियोसाकी

अनुवाद : डॉ. सुधीर दीक्षित

MANJUL
मंजुल पब्लिशिंग हाउस

"अमीरी की चोटी पर पहुँचने के लिए आपको *रिच डैड, पुअर डैड* पढ़नी ही चाहिए। इससे आपको बाज़ार की और पैसे की व्यावहारिक समझ मिलेगी, जिससे आपका आर्थिक भविष्य सुधर सकता है।"

- ज़िग ज़िग्लर
विश्वप्रसिद्ध लेखक और वक्ता

"अगर आपको अंदर की बात जाननी हो कि किस तरह अमीर बना जाए और बने रहा जाए तो यह पुस्तक पढ़ें! अपने बच्चों को रिश्वत दें (पैसे की भी रिश्वत, अगर इसके बिना काम न चले) ताकि वे भी इसे पढ़ें।"

- मार्क विक्टर हैन्सन
सह-लेखक, *न्यूयॉर्क टाइम्स*
नं. 1 बेस्टसेलिंग *चिकन सूप फ़ॉर द सोल*® सीरीज़

"*रिच डैड, पुअर डैड* पैसे पर लिखी गई कोई साधारण किताब नहीं है... यह पढ़ने में आसान है और इसके मुख्य सबक़- जैसे, अमीर बनने में एकाग्रता और हिम्मत की ज़रूरत होती है, बहुत ही आसान हैं।"

- *होनोलूलू* मैग्ज़ीन

"काश कि मैंने यह पुस्तक अपनी जवानी में पढ़ी होती! या शायद इससे भी अच्छा यह होता कि यह पुस्तक मेरे माता-पिता ने पढ़ी होती! यह तो इस तरह की पुस्तक है कि आप इसकी एक-एक कॉपी अपने हर बच्चे को देते हैं और कुछ कॉपी ख़रीदकर रख लेते हैं ताकि जब आपके नाती-पोते हों और वे 8 या 9 साल के हो जाएँ तो आप इसे उपहार में दे सकें।"

- स्यू ब्रॉन
'टेनेन्ट चेक ऑफ़ अमेरिका' के प्रेसिडेंट

"*रिच डैड, पुअर डैड* अमीरी का शॉर्टकट नहीं बताती। यह सिखाती है कि आप पैसे की समझ कैसे विकसित करें, किस तरह अपनी पैसे की ज़िम्मेदारी निभाएँ और इसके बाद किस तरह अमीर बनें। अगर आप अपनी आर्थिक प्रतिभा को जगाना चाहते हैं तो इसे ज़रूर पढ़ें।"

- डॉ. एड कोकेन
लेक्चरर ऑन फ़ाइनेन्स, आर.एम.आई.टी युनिवर्सिटी, मेलबोर्न

विषय–वस्तु

इसकी बहुत ज़रूरत है...11

सबक़

अध्याय एक : रिच डैड, पुअर डैड...25

अध्याय दो : सबक़ एक :

अमीर लोग पैसे के लिए काम नहीं करते..............................35

अध्याय तीन : सबक़ दो :

पैसे की समझ क्यों सिखाई जानी चाहिए?..........................75

अध्याय चार : सबक़ तीन :

अपने काम से काम रखो...107

अध्याय पाँच : सबक़ चार :

टैक्स का इतिहास और कॉरपोरेशन्स की ताक़त...................117

अध्याय छह : सबक़ पाँच :

अमीर लोग पैसे का आविष्कार करते हैं...............................131

अध्याय सात : सबक़ छह :

सीखने के लिए काम करें – पैसे के लिए काम न करें............157

शुरुआत

अध्याय आठ : बाधाओं को पार करना...173

शुरू करना

अध्याय नौ : शुरू करना...195

अध्याय दस : और ज़्यादा चाहिए?...219

उपसंहार : केवल 7,000 डॉलर में कॉलेज की शिक्षा........................225

प्रस्तावना

इसकी बहुत ज़रूरत है

क्या स्कूल बच्चों को असली ज़िंदगी के लिए तैयार करता है? मेरे मम्मी-डैडी कहते थे, "मेहनत से पढ़ो और अच्छे नंबर लाओ क्योंकि ऐसा करोगे तो एक अच्छी तनख़्वाह वाली नौकरी मिल जाएगी।" उनके जीवन का लक्ष्य यही था कि मेरी बड़ी बहन और मेरी कॉलेज की शिक्षा पूरी हो जाए। उनका मानना था कि अगर कॉलेज की शिक्षा पूरी हो गई तो हम ज़िंदगी में ज़्यादा कामयाब हो सकेंगे। जब मैंने 1976 में अपना डिप्लोमा हासिल किया - मैं फ़्लोरिडा स्टेट युनिवर्सिटी में अकाउंटिंग में ऑनर्स के साथ ग्रैजुएट हुई और अपनी कक्षा में क़ाफ़ी ऊँचे स्थान पर रही - तो मेरे मम्मी-डैडी का लक्ष्य पूरा हो गया था। यह उनकी ज़िंदगी की सबसे बड़ी उपलब्धि थी। "मास्टर प्लान" के हिसाब से, मुझे एक "बिग 8" अकाउंटिंग फ़र्म में नौकरी भी मिल गई। अब मुझे उम्मीद थी एक लंबे करियर और कम उम्र में रिटायरमेंट की।

मेरे पति माइकल भी इसी रास्ते पर चले थे। हम दोनों ही बहुत मेहनती परिवारों से आए थे जो बहुत अमीर नहीं थे। माइकल ने ऑनर्स के साथ ग्रैजुएशन किया था, एक बार नहीं बल्कि दो बार- पहली बार इंजीनियर के रूप में और फिर लॉ स्कूल से। उन्हें जल्दी ही पेटेंट लॉ में विशेषज्ञता रखने वाली वॉशिंगटन, डी.सी. की एक मानी हुई लॉ फ़र्म में नौकरी मिल गई। और इस तरह उनका भविष्य भी सुनहरा लग रहा था। उनके करियर का नक़्शा साफ़ था और यह बात तय थी कि वह भी जल्दी रिटायर हो सकते थे।

हालाँकि हम दोनों ही अपने करियर में सफल रहे, परंतु हम जो सोचते थे, हमारे साथ ठीक वैसा ही नहीं हुआ। हमने कई बार नौकरियाँ बदलीं - हालाँकि हर बार नौकरी बदलने के कारण सही थे - परंतु हमारे लिए किसी ने भी पेंशन योजना में निवेश नहीं किया। हमारे रिटायरमेंट फ़ंड हमारे ख़ुद के लगाए पैसों से ही बढ़ रहे हैं।

हमारी शादी बहुत सफल रही है और हमारे तीन बच्चे हैं। उनमें से दो कॉलेज में हैं और तीसरा अभी हाई स्कूल में गया ही है। हमने अपने बच्चों को सबसे अच्छी शिक्षा दिलाने में बहुत सा पैसा लगाया।

1996 में एक दिन मेरा बेटा स्कूल से घर लौटा। स्कूल से उसका मोहभंग हो गया था। वह पढ़ाई से ऊब चुका था। "मैं उन विषयों को पढ़ने में इतना ज़्यादा समय क्यों बर्बाद करूँ जो असल ज़िंदगी में मेरे कभी काम नहीं आएँगे?" उसने विरोध किया।

बिना सोचे-विचारे ही मैंने जवाब दिया, "क्योंकि अगर तुम्हारे अच्छे नंबर नहीं आए तो तुम कभी कॉलेज नहीं जा पाओगे।"

"चाहे मैं कॉलेज जाऊँ या न जाऊँ," उसने जवाब दिया, "मैं अमीर बनकर दिखाऊँगा।"

"अगर तुम कॉलेज से ग्रैजुएट नहीं हुए तो तुम्हें कोई अच्छी नौकरी नहीं मिलेगी," मैंने एक माँ की तरह चिंतित और आतंकित होकर कहा। "बिना अच्छी नौकरी के तुम किस तरह अमीर बनने के सपने देख सकते हो?"

मेरे बेटे ने मुस्कराकर अपने सिर को बोरियत भरे अंदाज़ में हिलाया। हम यह चर्चा पहले भी कई बार कर चुके थे। उसने अपने सिर को झुकाया और अपनी आँखें घुमाने लगा। मेरी समझदारी भरी सलाह एक बार फिर उसके कानों से भीतर नहीं गई थी।

हालाँकि वह स्मार्ट और प्रबल इच्छाशक्ति वाला युवक था, परंतु वह नम्र और शालीन भी था।

"मम्मी," उसने बोलना शुरू किया और भाषण सुनने की बारी अब मेरी थी। "समय के साथ चलिए! अपने चारों तरफ़ देखिए; सबसे अमीर लोग अपनी शिक्षा के कारण इतने अमीर नहीं बने हैं। माइकल जॉर्डन और मैडोना को देखिए। यहाँ तक कि बीच में ही हार्वर्ड छोड़ देने वाले बिल गेट्स ने माइक्रोसॉफ़्ट क़ायम किया। आज वे अमेरिका के सबसे अमीर व्यक्ति हैं और अभी उनकी उम्र भी तीस से चालीस के बीच ही है। और उस बेसबॉल पिचर के बारे में तो आपने सुना ही होगा जो हर साल चालीस लाख डॉलर से ज़्यादा कमाता है जबकि उस पर 'दिमाग़ी तौर पर कमज़ोर" होने का लेबल लगा हुआ है।

हम दोनों काफ़ी समय तक चुप रहे। अब मुझे यह समझ में आने लगा था कि मैं अपने बच्चे को वही सलाह दे रही थी जो मेरे माता-पिता ने मुझे दी थी। हमारे चारों तरफ़ की दुनिया बदल रही थी, परंतु हमारी सलाह नहीं बदली थी।

अच्छी शिक्षा और अच्छे ग्रेड हासिल करना अब सफलता की गारंटी नहीं रह गए थे और हमारे बच्चों के अलावा यह बात किसी की समझ में नहीं आई थी।

"मम्मी," उसने आगे कहा, "मैं डैडी और आपकी तरह कड़ी मेहनत नहीं करना चाहता। आपको काफ़ी पैसा मिलता है और हम एक शानदार मकान

में रहते हैं जिसमें बहुत से क़ीमती सामान हैं। अगर मैं आपकी सलाह मानूँगा तो मेरा हाल भी आपकी ही तरह होगा। मुझे भी ज़्यादा मेहनत करनी पड़ेगी ताकि मैं ज़्यादा टैक्स भर सकूँ और क़र्ज़ में डूब जाऊँ। वैसे भी आज की दुनिया में नौकरी की सुरक्षा बची नहीं है। मैं यह जानता हूँ कि छोटे और सही आकार की फ़र्म कैसी होती है। मैं यह भी जानता हूँ कि आज के दौर में कॉलेज के स्नातकों को कम तनख़्वाह मिलती है जबकि आपके ज़माने में उन्हें ज़्यादा तनख़्वाह मिला करती थी। डॉक्टरों को देखिए। वे अब उतना पैसा नहीं कमाते जितना पहले कभी कमाया करते थे। मैं जानता हूँ कि मैं रिटायरमेंट के लिए सामाजिक सुरक्षा या कंपनी पेंशन पर भरोसा नहीं कर सकता। अपने सवालों के मुझे नए जवाब चाहिए।"

वह सही था। उसे नए जवाब चाहिए थे और मुझे भी। मेरे माता-पिता की सलाह उन लोगों के लिए सही हो सकती थी जो 1945 के पहले पैदा हुए थे पर यह उन लोगों के लिए विनाशकारी साबित हो सकती थी जिन्होंने तेज़ी से बदल रही दुनिया में जन्म लिया था। अब मैं अपने बच्चों से यह सीधी सी बात नहीं कह सकती थी, "स्कूल जाओ, अच्छे ग्रेड हासिल करो और किसी सुरक्षित नौकरी की तलाश करो।"

मैं जानती थी कि मुझे अपने बच्चों की शिक्षा को सही दिशा देने के लिए नए तरीक़ों की खोज करनी होगी।

एक माँ और एक अकाउंटेंट होने के नाते मैं इस बात से परेशान थी कि स्कूल में बच्चों को धन संबंधी शिक्षा या वित्तीय शिक्षा नहीं दी जाती। हाई स्कूल ख़त्म होने से पहले ही आज के युवाओं के पास अपना क्रेडिट कार्ड होता है। यह बात अलग है कि उन्होंने कभी धन संबंधी पाठ्यक्रम में भाग नहीं लिया होता है और उन्हें यह भी नहीं पता होता है कि इसे किस तरह निवेश किया जाता है। इस बात का ज्ञान तो दूर की बात है कि क्रेडिट कार्ड पर चक्रवृद्धि ब्याज की गणना किस तरह की जाती है। इसे आसान भाषा में कहें तो उन्हें धन संबंधी शिक्षा नहीं मिलती और यह ज्ञान भी नहीं होता कि पैसा किस तरह काम करता है। इस तरह वे उस दुनिया का सामना करने के लिए कभी तैयार नहीं हो पाते जो उनका इंतज़ार कर रही है। एक ऐसी दुनिया, जिसमें बचत से ज़्यादा ख़र्च को महत्व दिया जाता है।

जब मेरा सबसे बड़ा बेटा कॉलेज के शुरुआती दिनों में अपने क्रेडिट कार्ड को लेकर क़र्ज़ में डूब गया तो मैंने उसके क्रेडिट कार्ड को नष्ट करने में उसकी मदद की। साथ ही मैं ऐसी तरकीब भी खोजने लगी जिससे मेरे बच्चों में पैसे की समझ आ सके।

पिछले साल एक दिन मेरे पति ने मुझे अपने ऑफ़िस से फ़ोन किया। "मेरे सामने एक सज्जन बैठे हैं और मुझे लगता है कि तुम उससे मिलना

चाहोगी।" उन्होंने कहा, "उनका नाम रॉबर्ट कियोसाकी है। वे एक व्यवसायी और निवेशक हैं तथा वे एक शैक्षणिक उत्पाद का पेटेंट करवाना चाहते हैं। मुझे लगता है कि तुम इसी चीज़ की तलाश कर रही थीं।"

जिसकी मुझे तलाश थी

मेरे पति माइक रॉबर्ट कियोसाकी द्वारा बनाए जा रहे नए शैक्षणिक उत्पाद *कैशफ़्लो* से इतने प्रभावित थे कि उन्होंने इसके परीक्षण में हमें बुलवा लिया। यह एक शैक्षणिक खेल था, इसलिए मैंने स्थानीय विश्वविद्यालय में पढ़ रही अपनी 19 वर्षीय बेटी से भी पूछा कि क्या वह मेरे साथ चलेगी और वह तैयार हो गई।

इस खेल में हम लगभग पंद्रह लोग थे, जो तीन समूहों में विभाजित थे।

माइक सही थे। मैं इसी तरह के शैक्षणिक उत्पाद की खोज कर रही थी। यह किसी रंगीन मोनोपॉली बोर्ड की तरह लग रहा था जिसके बीच में एक बड़ा सा चूहा था। परंतु मोनोपॉली से यह इस तरह अलग था कि इसमें दो रास्ते थे : एक अंदर और दूसरा बाहर। खेल का लक्ष्य था अंदर वाले रास्ते से बाहर निकलना - जिसे रॉबर्ट 'चूहा दौड़' कहते थे- और बाहरी रास्ते पर पहुँचना, या 'तेज़ रास्ते' पर जाना। रॉबर्ट के मुताबिक़ तेज़ रास्ता हमें यह बताता है कि असल ज़िंदगी में अमीर लोग किस तरह पैसे का खेल खेलते हैं।

रॉबर्ट ने हमें 'चूहा दौड़' के बारे में बताया :

"अगर आप किसी भी औसत रूप से शिक्षित, कड़ी मेहनत करने वाले आदमी की ज़िंदगी को देखें, तो उसमें आपको एक-सा ही सफ़र दिखेगा। बच्चा पैदा होता है। स्कूल जाता है। माता-पिता ख़ुश हो जाते हैं, क्योंकि बच्चे को स्कूल में अच्छे नंबर मिलते हैं और उसका दाख़िला कॉलेज में हो जाता है। बच्चा स्नातक हो जाता है और फिर योजना के अनुसार काम करता है। वह किसी आसान, सुरक्षित नौकरी या करियर की तलाश करता है। बच्चे को ऐसा ही काम मिल जाता है। शायद वह डॉक्टर या वकील बन जाता है। या वह सेना में भर्ती हो जाता है या फिर वह सरकारी नौकरी करने लगता है। बच्चा पैसा कमाने लगता है, उसके पास थोक में क्रेडिट कार्ड आने लगते हैं और अगर अब तक उसने ख़रीदारी करना शुरू नहीं किया है तो अब जमकर ख़रीदारी शुरू हो जाती है।

"ख़र्च करने के लिए पैसे पास में होते हैं तो वह उन जगहों पर जाता है जहाँ उसकी उम्र के ज़्यादातर नौजवान जाते हैं- लोगों से मिलते हैं, डेटिंग करते हैं और कभी-कभार शादी भी कर लेते हैं। अब ज़िंदगी में मज़ा आ जाता है, क्योंकि आजकल पुरुष और महिलाएँ दोनों नौकरी करते हैं। दो

तनख़्वाहें बहुत सुखद लगती हैं। पति-पत्नी दोनों को लगता है कि उनकी ज़िंदगी सफल हो गई है। उन्हें अपना भविष्य सुनहरा नज़र आता है। अब वे घर, कार, टेलीविज़न ख़रीदने का फ़ैसला करते हैं, छुट्टियाँ मनाने कहीं चले जाते हैं और फिर उनके बच्चे हो जाते हैं। बच्चों के साथ उनके ख़र्चे भी बढ़ जाते हैं। ख़ुशहाल पति-पत्नी सोचते हैं कि ज़्यादा पैसा कमाने के लिए अब उन्हें ज़्यादा मेहनत करनी चाहिए। उनका करियर अब उनके लिए पहले से ज़्यादा मायने रखता है। वे अपने काम में ज़्यादा मेहनत करने लगते हैं ताकि उन्हें प्रमोशन मिल जाए या उनकी तनख़्वाह बढ़ जाए। तनख़्वाह बढ़ती है पर उसके साथ ही दूसरा बच्चा पैदा हो जाता है। अब उन्हें एक बड़े घर की ज़रूरत महसूस होती है। वे नौकरी में और भी ज़्यादा मेहनत करते हैं, बेहतर कर्मचारी बन जाते हैं और ज़्यादा मन लगाकर काम करने लगते हैं। ज़्यादा विशेषज्ञता हासिल करने के लिए वे एक बार फिर किसी स्कूल में जाते हैं ताकि वे ज़्यादा पैसे कमा सकें। हो सकता है कि वे दूसरा काम भी खोज लें। उनकी आमदनी बढ़ जाती है, परंतु उस आमदनी पर उन्हें इन्कम टैक्स भी चुकाना पड़ता है। यही नहीं, उन्होंने जो बड़ा घर ख़रीदा है उस पर भी टैक्स देना होता है। इसके अलावा उन्हें सामाजिक सुरक्षा का टैक्स तो चुकाना ही है। इसी तरह, बहुत से टैक्स चुकाते-चुकाते उनकी तनख़्वाह चुक जाती है। वे अपनी बढ़ी हुई तनख़्वाह लेकर घर आते हैं और हैरान होते हैं कि इतना सारा पैसा आख़िर कहाँ चला जाता है। भविष्य के लिए बचत के हिसाब से वे कुछ म्यूचुअल फ़ंड भी ख़रीद लेते हैं और अपने क्रेडिट कार्ड से घर का किराना ख़रीदते हैं। उनके बच्चों की उम्र अब 5 या 6 साल हो जाती है। यह चिंता भी उन्हें सताने लगती है कि बच्चों के कॉलेज की शिक्षा के लिए भी बचत ज़रूरी है। इसके साथ ही उन्हें अपने रिटायरमेंट के लिए पैसा बचाने की चिंता भी सताने लगती है।"

"35 साल पहले पैदा हुए यह ख़ुशहाल दंपति अब अपनी नौकरी के बाक़ी दिन चूहा दौड़ में फँसकर बिताते हैं। वे अपनी कंपनी के मालिकों के लिए काम करते हैं, सरकार को टैक्स चुकाने के लिए काम करते हैं, और बैंक में अपनी गिरवी संपत्ति तथा क्रेडिट कार्ड के क़र्ज़ को चुकाने के लिए काम करते हैं।

"फिर वे अपने बच्चों को यह सलाह देते हैं कि उन्हें मन लगाकर पढ़ना चाहिए, अच्छे नंबर लाने चाहिए और किसी सुरक्षित नौकरी की तलाश करनी चाहिए। वे पैसे के बारे में कुछ भी नहीं सीखते और इसीलिए वे ज़िंदगी भर कड़ी मेहनत करते रहते हैं। यह प्रक्रिया पीढ़ी दर पीढ़ी चलती रहती है। इसे 'चूहा दौड़' कहते हैं।"

"चूहा दौड़" से निकलने का एक ही तरीक़ा है और वह यह कि आप अकाउंट्स और इन्वेस्टमेंट दोनों क्षेत्रों में निपुण हो जाएँ। दिक़्क़त यह है कि इन दोनों ही विषयों को बोरिंग और कठिन माना जाता है। मैं ख़ुद एक सी.पी.ए. हूँ

और मैंने बिग 8 अकाउंटिंग फ़र्म के लिए काम किया है। मुझे यह देखकर ताज्जुब हुआ कि रॉबर्ट ने इन दोनों बोरिंग और कठिन विषयों को सीखना कितना रोचक, सरल और रोमांचक बना दिया था। सीखने की प्रक्रिया इतनी अच्छी तरह छुपा ली गई थी कि जब हम "चूहा दौड़" से बाहर निकलने के लिए जी जान लगा रहे थे तो हमें यह ध्यान ही नहीं रहा कि हम कुछ सीख रहे थे।

शुरू में तो हम एक नए शैक्षणिक खेल का परीक्षण कर रहे थे, परंतु जल्दी ही इस खेल में मुझे और मेरी बेटी को मज़ा आने लगा। खेल के दौरान हम दोनों ऐसे विषयों पर बात कर रहे थे जिनके बारे में हमने पहले कभी बातें नहीं की थीं। एक लेखापाल होने के कारण इन्कम स्टेटमेंट और बैलेंस शीट से जुड़ा खेल खेलने में मुझे कोई परेशानी नहीं हुई। मैंने खेल के नियम और इसकी बारीकियाँ समझाने में अपनी बेटी और दूसरे लोगों की मदद भी की। उस रोज़ मैं 'चूहा दौड़' से सबसे पहले बाहर निकली और केवल मैं ही बाहर निकल पाई। बाहर निकलने में मुझे 50 मिनट का समय लगा, हालाँकि खेल लगभग तीन घंटे तक चला।

मेरी टेबल पर एक बैंकर बैठा था। इसके अलावा एक व्यवसायी था, और एक कंप्यूटर प्रोग्रामर भी था। मुझे यह देखकर बहुत हैरत हुई कि इन लोगों को अकाउंटिंग या इन्वेस्टमेंट के बारे में कितनी कम जानकारी है, जबकि ये विषय उनकी ज़िंदगी में कितनी ज़्यादा एहमियत रखते हैं। मेरे मन में यह सवाल भी उठ रहा था कि वे असल ज़िंदगी में अपने पैसे-धेले के कारोबार को कैसे सँभालते होंगे। मैं यह समझ सकती थी कि मेरी 19 साल की बेटी क्यों नहीं समझ सकती, पर ये लोग तो उससे दुगनी उम्र के थे और उन्हें ये बातें समझ में आनी चाहिए थीं।

'चूहा दौड़' से बाहर निकलने के बाद मैं दो घंटे तक अपनी बेटी और इन शिक्षित, अमीर वयस्कों को पाँसा फेंकते और अपना बाज़ार फैलाते देखती रही। हालाँकि मैं ख़ुश थी कि वे लोग कुछ नया सीख रहे थे, लेकिन मैं इस बात से बहुत परेशान और विचलित भी थी कि वयस्क लोग सामान्य अकाउंटिंग और इन्वेस्टमेंट के मूलभूत बिंदुओं के बारे में कितना कम जानते थे। उन्हें अपने इन्कम स्टेटमेंट और अपनी बैलेंस शीट के आपसी संबंध को समझने में ही बहुत समय लगा। अपनी संपत्ति ख़रीदते और बेचते समय उन्हें ध्यान ही नहीं रहा कि हर सौदे से उनकी महीने की आमदनी पर असर पड़ रहा है। मैंने सोचा, असल ज़िंदगी में ऐसे करोड़ों लोग होंगे जो पैसे के लिए सिर्फ़ इसलिए परेशान हो रहे हैं, क्योंकि उन्होंने ये दोनों विषय कभी नहीं पढ़े।

मैंने मन में सोचा, भगवान का शुक्र है कि हमें मज़ा आ रहा है और हमारा लक्ष्य खेल में जीतना है। जब खेल ख़त्म हो गया तो रॉबर्ट ने हमें पंद्रह मिनट तक *कैशफ़्लो* पर चर्चा करने और इसकी समीक्षा करने के लिए कहा।

मेरी टेबल पर बैठा व्यवसायी ख़ुश नहीं था। उसे खेल पसंद नहीं आया था। "मुझे यह सब जानने की कोई ज़रूरत नहीं है," उसने ज़ोर से कहा। "मेरे पास इन सबके लिए अकाउंटेंट, बैंकर और वकील हैं, जिन्हें यह सब मालूम है।"

रॉबर्ट का जवाब था, "क्या आपने ग़ौर किया है कि ऐसे बहुत से अकाउंटेंट हैं जो अमीर नहीं हैं? और यही हाल बैंकर्स, वकीलों, स्टॉकब्रोकर्स और रियल एस्टेट ब्रोकर्स का भी है। वे बहुत कुछ जानते हैं और प्रायः वे लोग स्मार्ट होते हैं परंतु उनमें से ज़्यादातर अमीर नहीं होते। चूँकि हमारे स्कूल हमें वह सब नहीं सिखाते जो अमीर लोग जानते हैं, इसलिए हम इन लोगों से सलाह लेते हैं। परंतु एक दिन जब आप किसी हाईवे पर कार से जाते हैं, आप ट्रैफ़िक जाम में फँस जाते हैं। आप बाहर निकलने के लिए छटपटाते हैं। जब आप अपनी दाईं तरफ़ देखते हैं तो वहाँ आप देखते हैं कि आपका अकाउंटेंट भी उसी ट्रैफ़िक जाम में फँसा हुआ है। फिर आप अपनी बाईं तरफ़ देखते हैं और आपको वहाँ अपना बैंकर भी उसी हाल में नज़र आता है। इससे आपको हालात का अंदाज़ा हो जाएगा।"

कंप्यूटर प्रोग्रामर भी इस खेल से प्रभावित नहीं हुआ था। "यह सीखने के लिए मैं सॉफ़्टवेयर ख़रीद सकता हूँ।"

बैंकर ज़रूर प्रभावित हुआ था। "मैंने स्कूल में अकाउंटिंग सीखी थी, परंतु मैं अब तक यह नहीं समझ पाया था कि इसे असल ज़िंदगी में किस तरह काम में लाया जाए। अब मैं समझ गया हूँ। मुझे 'चूहा दौड़' से बाहर निकलने के लिए ख़ुद को तैयार करने की ज़रूरत है।"

परंतु मेरी पुत्री के विचारों से मैं सबसे ज़्यादा रोमांचित हुई। उसने कहा, "मुझे सीखने में बड़ा मज़ा आया। मैंने इस बारे में बहुत कुछ सीखा कि पैसा असली ज़िंदगी में किस तरह काम करता है और इसका निवेश किस तरह करना चाहिए।"

फिर उसने आगे कहा, "अब मैं जानती हूँ कि मैं अपने काम करने के लिए किस तरह का व्यवसाय चुनूँ। और यह व्यवसाय चुनने का कारण नौकरी की सुरक्षा, उससे मिलने वाले फ़ायदे या तनख़्वाह नहीं होंगे। अगर मैं इस खेल में सिखाई जाने वाली बातें सीख जाती हूँ तो मैं कुछ भी करने के लिए आज़ाद हूँ और वह सीखने के लिए आज़ाद हूँ जो मैं दिल से सीखना चाहती हूँ। अभी तक मुझे उस चीज़ को सीखना पड़ता था जिससे मुझे नौकरी पाने में मदद मिले। अगर मैं यह खेल सीख जाती हूँ तो मुझे नौकरी की सुरक्षा और सामाजिक सुरक्षा की ज़्यादा चिंता नहीं होगी, जैसी कि मेरी बहुत सी सहेलियों को होती है।"

खेल ख़त्म होने के बाद मुझे रॉबर्ट से बात करने के लिए ज़्यादा समय

नहीं मिला। हमने उनकी योजना पर आगे बातें करने के लिए बाद में मिलने का फ़ैसला किया। इतना तो मैं जानती थी कि इस खेल के बहाने रॉबर्ट यह चाहते थे कि लोगों में पैसे की बेहतर समझ विकसित हो जाए। यही कारण था कि मैं उनकी योजनाओं के बारे में ज़्यादा जानने के लिए उत्सुक थी।

मेरे पति और मैंने रॉबर्ट और उनकी पत्नी के साथ अगले हफ़्ते डिनर मीटिंग रख ली। हालाँकि यह हमारा पहला सामाजिक मेल-जोल था, फिर भी हमें ऐसा महसूस हो रहा था जैसे हम एक-दूसरे को बरसों से जानते हों।

हमने पाया कि हममें बहुत सी बातें एक जैसी हैं। हमने बहुत से विषयों पर बातें कीं- खेलों, नाटकों, रेस्तराँओं और सामाजिक-आर्थिक विषयों पर। हमने बदलती हुई दुनिया के बारे में भी बातें कीं। हमने इस मुद्दे पर बहुत समय तक विचार किया कि ज़्यादातर अमेरिकी कैसे अपने रिटायरमेंट के लिए बहुत कम पैसा बचा पाते हैं या बिलकुल भी नहीं बचा पाते। हमने सामाजिक सुरक्षा और मेडिकेयर की लगभग दीवालिया हालत पर भी विचार किया। क्या हमारे बच्चों को 7.5 करोड़ वृद्ध लोगों के रिटायरमेंट के लिए टैक्स चुकाना होगा? हम हैरान थे कि लोग पेंशन योजना के भरोसे बैठकर कितना बड़ा ख़तरा मोल ले रहे हैं।

रॉबर्ट की सबसे बड़ी चिंता यह थी कि अमीरों और ग़रीबों के बीच फ़ासला लगातार बढ़ता जा रहा है। ऐसा न सिर्फ़ अमेरिका में हो रहा है, बल्कि पूरी दुनिया में हो रहा है। रॉबर्ट स्वशिक्षित और स्वनिर्मित व्यवसायी थे। वे दुनिया भर में निवेश कर चुके थे और 47 वर्ष की उम्र में रिटायर होने में सफल हो गए थे। वे काम इसलिए कर रहे थे क्योंकि उन्हें भी वही चिंता थी, जो मुझे अपने बच्चों को लेकर सता रही थी। वे जानते हैं कि दुनिया बदल चुकी है परंतु इसके बावजूद शिक्षा पद्धतियाँ बिलकुल भी नहीं बदली थीं। रॉबर्ट के अनुसार, बच्चे सालों तक दक़ियानूसी शिक्षा पद्धति में अपना समय गुज़ारते हैं और ऐसे विषय पढ़ते हैं जो उनके जीवन में कभी भी, कहीं भी काम नहीं आने वाले हैं और वे ऐसी दुनिया के लिए तैयारी करते हैं जिसका अब नामोनिशान भी नहीं बचा है।

"आज, आप किसी भी बच्चे को जो सबसे ख़तरनाक सलाह दे सकते हैं वह यह है, 'स्कूल जाओ, अच्छे नंबर लाओ और कोई सुरक्षित नौकरी ढूँढ़ो।'" उन्होंने कहा, "यह पुरानी सलाह है और यह ख़राब सलाह है। अगर आप यह देख सकते हैं कि एशिया, यूरोप, दक्षिण अमेरिका में क्या हो रहा है तो आप भी उतनी ही चिंतित होंगी जितना कि मैं।"

रॉबर्ट के अनुसार यह बुरी सलाह है, "क्योंकि अगर आप चाहते हैं कि आपके बच्चे का भविष्य आर्थिक रूप से सुरक्षित हो, तो आप पुराने नियमों के सहारे नए खेल को नहीं खेल सकते। यह बहुत ख़तरनाक होगा।"

मैंने उससे पूछा कि "पुराने नियमों" से उसका क्या मतलब है?

"मेरी तरह के लोग अलग तरह के नियमों से खेलते हैं और आपकी तरह के लोग पुराने नियमों की लीक पर ही चलते रहते हैं," उन्होंने कहा, "क्या होता है जब कोई कॉरपोरेशन स्टाफ़ कम करने की घोषणा करता है?"

"लोगों को नौकरी से निकाल दिया जाता है। परिवार तबाह हो जाते हैं। बेरोज़गारी बढ़ जाती है।"

"हाँ, परंतु कंपनी पर इसका क्या असर पड़ता है, ख़ासकर जब वह कंपनी स्टॉक एक्सचेंज में दर्ज हो?"

"जब स्टाफ़ कम करने की घोषणा होती है तो स्टॉक की क़ीमत बढ़ जाती है," मैंने कहा। "जब कंपनी तनख़्वाह का ख़र्च कम करती हैं तो बाज़ार इस बात को पसंद करता है, ऐसा चाहे स्टाफ़ कम करके किया जाए या फिर कंप्यूटर के माध्यम से किया जाए।"

उन्होंने कहा, "आप ठीक कह रही हैं। और जब स्टॉक की क़ीमतें बढ़ती हैं तो मेरी तरह के लोग यानी जिनके पास उस कंपनी के शेयर होते हैं वे ज़्यादा अमीर हो जाते हैं। अलग तरह के नियमों से मेरा यही आशय था। कर्मचारी हारते हैं; मालिक और निवेशक जीतते हैं।"

रॉबर्ट कर्मचारी और मालिक के बीच के फ़र्क़ को समझा रहे थे। यह फ़र्क़ था अपनी क़िस्मत पर ख़ुद अपना नियंत्रण होना या फिर अपनी क़िस्मत पर किसी दूसरे का नियंत्रण होना।

"परंतु ज़्यादातर लोग यह नहीं समझ पाते हैं कि ऐसा क्यों होता है," मैंने कहा, "उन्हें लगता है कि यह ठीक नहीं है।"

उसका जवाब था, "इसीलिए तो बच्चों से यह कहना मूर्खता है, 'अच्छी शिक्षा प्राप्त करो।' यह सोचना मूर्खता है कि स्कूलों में दी जा रही शिक्षा से बच्चे उस दुनिया का सामना करने के लिए तैयार हो जाएँगे जिसमें वे कॉलेज के बाद पहुँचने वाले हैं। हर बच्चे को ज़्यादा शिक्षा की ज़रूरत है। एक अलग तरह की शिक्षा की। और उन्हें नए नियमों को जानने की भी ज़रूरत है। अलग तरह के नियमों को जानने की।"

"धन के कुछ नियम होते हैं जिनसे अमीर लोग खेलते हैं और धन के कुछ और नियम होते हैं जिनसे बाक़ी 95 फ़ीसदी लोग खेलते हैं। और ये 95 फ़ीसदी लोग उन नियमों को अपने घर और स्कूल में सीखते हैं। इसीलिए आजकल किसी बच्चे से यह कहना ख़तरनाक है, 'मन लगाकर पढ़ो और अच्छी नौकरी खोजो।' आज बच्चों को अलग तरह की शिक्षा की ज़रूरत है और आज की शिक्षा नीति उन्हें कुछ मूलभूत बातें नहीं सिखा पा रही है। इस

बात से कोई फ़र्क़ नहीं पड़ता कि क्लासरूम में कितने कंप्यूटर रखे हैं या स्कूल कितना पैसा ख़र्च कर रहे हैं। जब शिक्षा नीति में वह विषय ही नहीं है, तो उसे किस तरह पढ़ाया जा सकता है।"

अब सवाल यह उठता है कि किस तरह माता-पिता अपने बच्चों को वह सिखा सकते हैं जो वे स्कूल में नहीं सीख पाते? आप अपने बच्चे को अकाउंटिंग किस तरह सिखाते हैं? क्या इससे वे बोर नहीं हो जाते? और आप उन्हें किस तरह निवेश करना सिखाएँगे जब एक पालक के रूप में आप खुद निवेश के ख़तरे से डरते हैं? अपने बच्चों को सुरक्षित जीवन के लिए तैयार करने के बजाय मैंने यह बेहतर समझा कि उन्हें रोमांचक जीवन के लिए तैयार किया जाए।

"तो आप किस तरह किसी बच्चे को धन और उन सब चीज़ों के बारे में सिखा सकते हैं जिन पर हमने अभी विचार किया है?" मैंने रॉबर्ट से पूछा। "हम किस तरह इसे माता-पिता के लिए आसान बना सकते हैं, ख़ासकर तब जब उन्हें ख़ुद ही इसकी समझ न हो।"

उन्होंने कहा, "मैंने इस विषय पर एक पुस्तक लिखी है।"

"वह पुस्तक कहाँ है?"

"मेरे कंप्यूटर में। यह बरसों से वहीं बिखरी पड़ी है। मैं कभी-कभार उसमें कुछ बातें जोड़ देता हूँ परंतु मैं आज तक उसे कभी इकट्ठा नहीं कर पाया। मैंने इस पुस्तक को तब लिखना शुरू किया था जब मेरी पहली पुस्तक बेस्टसेलर हो गई थी, परंतु मैं अभी तक अपनी नई पुस्तक को पूरा नहीं कर पाया हूँ। यह अभी भी खंडों में है।"

और वह पुस्तक निश्चित रूप से खंडों में ही थी। उन बेतरतीब खंडों को पढ़ने के बाद मैंने यह फ़ैसला किया कि पुस्तक निश्चित रूप से बेहतरीन थी और समाज में इसकी बहुत ज़रूरत थी, ख़ासकर ऐसे समय में जब दुनिया तेज़ी से बदल रही थी। हम दोनों तत्काल इस निर्णय पर पहुँचे कि मैं रॉबर्ट की पुस्तक में सह-लेखक बन जाऊँ।

मैंने उनसे पूछा कि उनके विचार से किसी बच्चे को कितनी वित्तीय शिक्षा की ज़रूरत होती है। उन्होंने कहा कि यह बच्चे पर निर्भर करता है। अपने बचपन में ही उन्होंने यह जान लिया था कि वे अमीर बनना चाहते थे और उन्हें एक ऐसे पितास्वरूप व्यक्ति मिल गए थे जो अमीर थे और जो उनका मार्गदर्शन करने के इच्छुक भी थे। रॉबर्ट का कहना था कि शिक्षा ही सफलता की नींव है। जिस तरह स्कूल में सीखी गई बातें बहुत महत्वपूर्ण होती हैं, उसी तरह धन संबंधी समझ और बोलने की कला भी महत्वपूर्ण होती हैं।

आगे की कहानी रॉबर्ट के दो डैडियों के बारे में है, जिनमें से एक अमीर

हैं और दूसरे ग़रीब। इनके ज़रिए रॉबर्ट उन रहस्यों को बताएँगे जो उन्होंने अपने जीवन में सीखे हैं। दोनों डैडियों के बीच का अंतर एक ख़ास बात उजागर करता है। इस पुस्तक को मैंने बढ़ाया है, इसमें कुछ जोड़ा और घटाया है और इसे व्यवस्थित करने का काम किया है। जो अकाउंटेंट इस पुस्तक को पढ़ें, उनसे मेरा यही अनुरोध है कि वे अपने किताबी ज्ञान को एक तरफ़ रख दें और अपने दिमाग़ में रॉबर्ट के सिद्धांतों को घुस जाने दें। हालाँकि उनमें से कई सिद्धांत पहली नज़र में ग़लत लगेंगे, अकांउट्स के सिद्धांतों की बुनियादी बातों को चुनौती देते लगेंगे, परंतु यह याद रखें कि वे एक महत्वपूर्ण दृष्टि देते हैं कि किस तरह सच्चे निवेशक अपने निवेश के फ़ैसलों का विश्लेषण करते हैं।

जब हम अपने बच्चों को "स्कूल जाने, मेहनत से पढ़ने और अच्छी नौकरी पाने" की सलाह देते हैं तो अक्सर हम ऐसा सांस्कृतिक आदतों के कारण करते हैं। ऐसा करना हमेशा सही चीज़ मानी गई है। जब मैं रॉबर्ट से मिली, तो उनके विचारों ने शुरू में तो मुझे चौंका दिया। दो डैडियों के साथ पले-बढ़े रॉबर्ट के सामने दो अलग-अलग लक्ष्य होते थे। उनके पढ़े-लिखे डैडी उन्हें कॉरपोरेशन में नौकरी करने की सलाह देते थे। उनके अमीर डैडी उन्हें कॉरपोरेशन का मालिक बनने की सलाह देते थे। दोनों ही कामों में शिक्षा की ज़रूरत थी, परंतु पढ़ाई के विषय बिलकुल अलग-अलग थे। पढ़े-लिखे डैडी रॉबर्ट को स्मार्ट बनने के लिए प्रोत्साहित करते थे। अमीर डैडी रॉबर्ट को यह जानने के लिए प्रोत्साहित करते थे कि किस तरह स्मार्ट लोगों की सेवाएँ ली जाएँ।

दो डैडियों के होने से कई समस्याएँ भी पैदा हुईं। रॉबर्ट के असली डैडी हवाई राज्य में शिक्षाप्रमुख थे। जब रॉबर्ट 16 साल के हुए तो उन्हें इस बात की कोई ख़ास चिंता नहीं सता रही थी, "अगर तुम्हें अच्छे नंबर नहीं मिलते तो तुम्हें कोई अच्छी नौकरी नहीं मिलेगी।" वे पहले से ही जानते थे कि उनके करियर का लक्ष्य था कॉरपोरेशन का मालिक बनना, न कि उसमें नौकरी करना। सच तो यह है कि अगर हाई स्कूल में समझदार और मेहनती परामर्शदाता नहीं मिला होता तो रॉबर्ट कभी कॉलेज भी नहीं गए होते। वे इस बात को मानते हैं। वे दौलत कमाने के लिए बेताब थे परंतु वे आख़िरकार मान ही गए कि कॉलेज की शिक्षा से भी उन्हें फ़ायदा हो सकता है।

दरअसल इस पुस्तक में दिए गए विचार शायद बहुत से माता-पिताओं को क्रांतिकारी और अतिशयोक्तिपूर्ण लगेंगे। कई लोगों को तो अपने बच्चों को स्कूल में रखने में ही काफ़ी मेहनत करनी पड़ रही है। परंतु बदलते हुए समय को देखते हुए हमें नए और जोखिम भरे विचारों की तरफ़ ध्यान देने की ज़रूरत है। अपने बच्चों को कर्मचारी बनने की सलाह देने का मतलब यह है कि हम उन्हें ज़िंदगी भर अपनी ख़ून-पसीने की कमाई से इन्कम टैक्स व और भी न जाने कितने टैक्स चुकाने की सलाह देते हैं और इसके बाद भी पेंशन की कोई

गारंटी नहीं होती। और यह सच है कि आज के ज़माने में टैक्स किसी व्यक्ति का सबसे बड़ा ख़र्च है। हक़ीक़त में, ज़्यादातर परिवार तो जनवरी से आधी मई तक सिर्फ़ अपने टैक्स चुकाने के लिए ही सरकार की नौकरी करते हैं। आज नए विचारों की बहुत ज़रूरत है और यह पुस्तक हमें नए विचार देती है।

रॉबर्ट का दावा है कि अमीर लोग अपने बच्चों को अलग तरह की शिक्षा देते हैं। वे अपने बच्चों को घर पर सिखाते हैं, डिनर टेबल पर। हो सकता है कि यह विचार वे न हों जिन पर आप अपने बच्चों के साथ बातें करते हों, परंतु उन पर नज़र डालने के लिए धन्यवाद। और मैं आपको सलाह देती हूँ कि आप खोज करते रहें। एक माँ और एक सी.पी.ए. होने के नाते मैं तो यही सोचती हूँ कि अच्छे नंबर लाना और एक बढ़िया नौकरी पा लेना एक पुराना विचार है। हमें अपने बच्चों को नए तरह के विचार देने होंगे। हमें उन्हें अलग तरह की शिक्षा देनी होगी। शायद हम अपने बच्चों को यह सिखाएँ कि अच्छे कर्मचारी होने के साथ-साथ वे अपना खुद का निवेश कॉरपोरेशन भी खोल सकें। दोनों का यह तालमेल बढ़िया रहेगा।

एक माँ होने के नाते मुझे उम्मीद है कि यह पुस्तक सभी अभिभावकों के लिए फ़ायदेमंद होगी। रॉबर्ट लोगों को यह बताना चाहते हैं कि कोई भी व्यक्ति अगर ठान ले, तो अमीर बन सकता है। अगर आप एक माली या गेटकीपर हैं या पूरी तरह बेरोज़गार हैं तो भी आपमें ख़ुद को और अपने परिवार के लोगों को धन संबंधी बातें सिखाने की क़ाबिलियत है। यह याद रखें कि धन संबंधी बुद्धि वह दिमाग़ी तरीक़ा है जिससे हम अपनी धन संबंधी समस्याओं को सुलझाते हैं।

आज हम ऐसे विश्वव्यापी तकनीकी परिवर्तनों का सामना कर रहे हैं, जिनका सामना हमने आज से पहले कभी नहीं किया। किसी के पास भी जादू की पुड़िया नहीं है, परंतु एक बात तो तय है : ऐसे परिवर्तन हमारे सामने आने वाले हैं जो हमारे यथार्थ से परे हैं। कौन जाने भविष्य हमारे लिए क्या लाता है? पर जो भी हो, हमारे पास दो मूलभूत विकल्प मौजूद हैं : या तो हम सुरक्षा की राह पर चलें या फिर हम स्मार्ट बनकर ख़ुद को धन संबंधी क्षेत्रों में शिक्षित करें और अपने बच्चों की धन संबंधी प्रतिभा को भी जागृत करें।

- शेरॉन लेक्टर

अध्याय एक

रिच डैड, पुअर डैड

रॉबर्ट कियोसाकी के अनुसार

मेरे दो डैडी थे, एक अमीर और दूसरे ग़रीब। एक बहुत पढ़े-लिखे थे और समझदार थे। वे पीएच.डी. थे और उन्होंने अपने चार साल के अंडरग्रैजुएट कार्य को दो साल से भी कम समय में कर लिया था। इसके बाद वे आगे पढ़ने के लिए स्टेनफ़ोर्ड युनिवर्सिटी, युनिवर्सिटी ऑफ़ शिकागो तथा नॉर्थवेस्टर्न युनिवर्सिटी गए और यह सब उन्होंने पूरी तरह से स्कॉलरशिप के सहारे ही किया। मेरे दूसरे डैडी आठवीं से आगे नहीं पढ़े थे।

दोनों ही अपने करियर में सफल थे। दोनों ने ज़िंदगी भर कड़ी मेहनत की थी। दोनों ने ही काफ़ी पैसा कमाया था। परंतु उनमें से एक पूरी ज़िंदगी पैसे के लिए परेशान होता रहा। दूसरा हवाई के सबसे अमीर व्यक्तियों में से एक बन गया। एक के मरने पर उसके परिवार, चर्च और ज़रूरतमंदों को करोड़ों डॉलर की दौलत मिली। दूसरा अपने पीछे क़र्ज़ छोड़कर मरा।

मेरे दोनों डैडी इरादे के पक्के, चमत्कारी और प्रभावशाली थे। दोनों ने मुझे सलाह दी, परंतु उनकी सलाह एक-सी नहीं थी। दोनों ही शिक्षा पर बहुत ज़ोर देते थे, परंतु उनके द्वारा सुझाए गए पढ़ाई के विषय अलग-अलग थे।

अगर मेरे पास केवल एक ही डैडी होते, तो मैं या तो उनकी सलाह मान लेता या फिर उसे ठुकरा देता। चूँकि सलाह देने वाले दो थे, इसलिए मेरे पास दो विरोधाभासी विचार होते थे। (एक अमीर आदमी का और दूसरा ग़रीब आदमी का)।

किसी भी एक विचार को सीधे-सीधे मान लेने या न मानने के बजाय मैं उनकी सलाहों पर काफ़ी सोचा करता था, उनकी तुलना करता था और फिर ख़ुद के लिए फ़ैसला किया करता था।

समस्या यह थी कि अमीर डैडी अभी अमीर नहीं थे और ग़रीब डैडी अभी ग़रीब नहीं थे। दोनों ही अपने करियर शुरू कर रहे थे और दोनों ही दौलत तथा परिवार के लिए मेहनत कर रहे थे। परंतु पैसे के बारे में दोनों के विचार और नज़रिए एकदम अलग थे।

उदाहरण के तौर पर एक डैडी कहते थे, "पैसे का मोह ही सभी बुराइयों की जड़ है।" जबकि दूसरे डैडी कहा करते थे, "पैसे की कमी ही सभी बुराइयों की जड़ है।"

जब मैं छोटा था, तो मुझे दोनों डैडियों की अलग-अलग सलाहों से दिक़्क़त होती थी। एक अच्छा बच्चा होने के नाते मैं दोनों की बातें सुनना चाहता था। परेशानी यह थी कि दोनों एक-सी बातें नहीं कहते थे। उनके विचारों में ज़मीन-आसमान का फ़र्क़ था, ख़ासकर पैसे के मामले में। मैं काफ़ी लंबे समय तक यह सोचा करता कि उनमें से किसने क्या कहा, क्यों कहा और उसका परिणाम क्या होगा।

मेरा बहुत-सा समय सोच-विचार में ही गुज़र जाता था। मैं ख़ुद से बार-बार इस तरह के सवाल पूछा करता, "उन्होंने ऐसा क्यों कहा?" और फिर दूसरे डैडी की कही हुई बातों के बारे में भी इसी तरह के सवाल पूछता। काश मैं यह बोल सकता, "हाँ, वे बिलकुल सही हैं। मैं उनकी बातों से पूरी तरह सहमत हूँ।" या यह कहकर मैं सीधे उनकी बात ठुकरा सकता, "बुड्ढे को यह नहीं पता कि वह क्या कह रहा है।" चूँकि दोनों ही मुझे प्यारे थे, इसलिए मुझे ख़ुद के लिए सोचने पर मजबूर होना पड़ा। इस तरह सोचना मेरी आदत बन गई जो आगे चलकर मेरे लिए बहुत फ़ायदेमंद साबित हुई। अगर मैं एक तरह से ही सोच पाता तो यह मेरे लिए इतना फ़ायदेमंद नहीं होता।

धन-दौलत का विषय स्कूल में नहीं, बल्कि घर पर पढ़ाया जाता है। शायद इसीलिए अमीर लोग और ज़्यादा अमीर होते जाते हैं, जबकि ग़रीब और ज़्यादा ग़रीब होते जाते हैं और मध्य वर्ग क़र्ज़ में डूबा रहता है। हममें से ज़्यादातर लोग पैसे के बारे में अपने माता-पिता से सीखते हैं। कोई ग़रीब पिता अपने बच्चे को पैसे के बारे में क्या सिखा सकता है? वह सिर्फ़ इतना ही कह सकता है, "स्कूल जाओ और मेहनत से पढ़ो।" हो सकता है वह बच्चा अच्छे नंबरों से कॉलेज की पढ़ाई पूरी कर ले। फिर भी पैसे के मामले में उसकी मानसिकता और उसका सोचने का ढँग एक ग़रीब आदमी जैसा ही बना रहेगा। यह सब उसने तब सीखा था जब वह छोटा बच्चा था।

धन का विषय स्कूलों में नहीं पढ़ाया जाता। स्कूलों में शैक्षणिक और व्यावसायिक निपुणताओं पर ज़ोर दिया जाता है, न कि धन संबंधी निपुणता पर। इससे यह साफ़ हो जाता है कि जिन स्मार्ट बैंकर्स, डॉक्टर्स और अकाउंटेंट्स के स्कूल में अच्छे नंबर आते हैं वे ज़िंदगी भर पैसे के लिए संघर्ष क्यों करते हैं। हमारे देश पर जो भारी क़र्ज़ लदा हुआ है वह काफ़ी हद तक उन उच्च शिक्षित राजनेताओं और सरकारी अधिकारियों के कारण है जो आर्थिक नीतियाँ बनाते हैं और मज़े की बात यह है कि वे धन के बारे में बहुत कम जानते हैं।

मैं अक्सर नई सदी में आने वाली समस्याओं के बारे में सोचता हूँ। तब क्या होगा जब हमारे पास ऐसे करोड़ों लोग होंगे जिन्हें आर्थिक और चिकित्सकीय मदद की ज़रूरत होगी। धन संबंधी मदद के लिए या तो वे अपने परिवारों पर या फिर सरकार पर निर्भर होंगे। क्या होगा जब मेडिकेयर और सोशल सिक्युरिटी के पास का पैसा ख़त्म हो जाएगा? किस तरह कोई देश तरक़्क़ी कर पाएगा अगर पैसे के बारे में पढ़ाई की ज़िम्मेदारी माता-पिता के ऊपर छोड़ दी जाएगी- जिनमें से ज़्यादातर ग़रीब हैं या ग़रीब होंगे?

चूँकि मेरे पास दो प्रभावशाली डैडी थे, इसलिए मैंने दोनों से ही सीखा। मुझे दोनों की सलाह पर सोचना पड़ता था। इस तरह से सोचते-सोचते मैंने यह भी जान लिया कि किसी व्यक्ति के विचार उसकी ज़िंदगी पर कितना ज़बर्दस्त प्रभाव डाल सकते हैं। उदाहरण के तौर पर, एक डैडी को यह कहने की आदत थी, "मैं इसे नहीं ख़रीद सकता।" दूसरे डैडी इन शब्दों के इस्तेमाल से चिढ़ते थे। वे ज़ोर देकर कहा करते थे कि मुझे इसके बजाय यह कहना चाहिए, "मैं इसे कैसे ख़रीद सकता हूँ?" पहला वाक्य नकारात्मक है और दूसरा प्रश्नवाचक। एक में बात ख़त्म हो जाती है और दूसरे में आप सोचने के लिए मजबूर हो जाते हैं। मेरे जल्द-ही-अमीर-बनने-वाले डैडी ने मुझे समझाया कि जब हम कहते हैं, "मैं इसे नहीं ख़रीद सकता" तो हमारा दिमाग़ काम करना बंद कर देता है। इसके बजाय जब हम यह सवाल पूछते हैं, "मैं इसे कैसे ख़रीद सकता हूँ" तो हमारा दिमाग़ काम करने लगता है। उनका यह मतलब नहीं था कि आपका जिस चीज़ पर दिल आ जाए उसे ख़रीद ही लें। वे लगभग दीवानगी की हद तक अपने दिमाग़ को कसरत करवाना चाहते थे क्योंकि उनके ख़्याल से दिमाग़ दुनिया का सबसे ताक़तवर कंप्यूटर है। "मेरा दिमाग़ हर रोज़ तेज़ होता जाता है क्योंकि मैं इसकी कसरत करता रहता हूँ। यह जितना तेज़ होता जाता है, मैं इसकी मदद से उतना ही ज़्यादा पैसा कमा सकता हूँ।" उनका मानना था कि 'मैं इसे नहीं ख़रीद सकता' कहना दिमाग़ी आलस की पहचान है।

हालाँकि दोनों ही डैडी अपने काम में कड़ी मेहनत करते थे, परंतु मैंने देखा कि पैसे के मामले में एक डैडी की आदत यह थी कि वे अपने दिमाग़ को सुला देते थे और दूसरे डैडी अपने दिमाग़ को लगातार कसरत करवाते रहते थे। इसका दीर्घकालीन परिणाम यह हुआ कि एक डैडी आर्थिक रूप से बहुत अमीर होते चले गए जबकि दूसरे डैडी लगातार कमज़ोर होते गए। इसे इस तरह से समझें कि एक व्यक्ति हर रोज़ कसरत करने के लिए जिम जाता है, जबकि दूसरा व्यक्ति अपने सोफ़े पर बैठकर टीवी देखता रहता है। शरीर की सही कसरत से आप ज़्यादा तंदुरुस्त हो सकते हैं और दिमाग़ की सही कसरत से आप ज़्यादा अमीर हो सकते हैं। आलस्य से स्वास्थ्य और धन दोनों का नुक़सान होता है।

मेरे दोनों डैडियों की विचारधारा में ज़मीन-आसमान का अंतर था। एक डैडी की सोच थी कि अमीरों को ज़्यादा टैक्स देना चाहिए ताकि बेचारे ग़रीबों को ज़्यादा फ़ायदा मिल सके। जबकि दूसरे डैडी कहते थे, "टैक्स उन लोगों को सज़ा देता है जो उत्पादन करते हैं और उन लोगों को इनाम देता है जो उत्पादन नहीं करते।"

एक डैडी सिखाते थे, "मेहनत से पढ़ो ताकि तुम्हें किसी अच्छी कंपनी में नौकरी मिल जाए।" जबकि दूसरे डैडी की सीख यह थी, "मेहनत से पढ़ो ताकि तुम्हें किसी अच्छी कंपनी को ख़रीदने का मौक़ा मिल जाए।"

एक डैडी कहते थे, "मैं इसलिए अमीर नहीं हूँ क्योंकि मुझे बाल-बच्चों को पालना पड़ता है।" दूसरे डैडी कहते थे, "मुझे इसलिए अमीर बनना है क्योंकि मुझे बाल-बच्चों को पालना है।"

एक डैडी डिनर की टेबल पर पैसे और बिज़नेस के बारे में बात करने के लिए हमेशा प्रोत्साहित करते थे। दूसरे डैडी भोजन करते समय पैसे की बातें करने के लिए मना करते थे।

एक का कहना था, "जहाँ पैसे का सवाल हो, सुरक्षित क़दम उठाओ, ख़तरा मत उठाओ।" दूसरे का कहना था, "ख़तरों का सामना करना सीखो।"

एक का मानना था, "हमारा घर ही हमारा सबसे बड़ा निवेश और हमारी सबसे बड़ी संपत्ति है।" दूसरे का मानना था, "मेरा घर मेरा दायित्व है, और अगर आपका घर आपकी नज़र में आपका सबसे बड़ा निवेश है, तो आप ग़लत हैं।"

दोनों ही डैडी अपने बिल समय पर चुकाते थे, परंतु उनमें से एक सबसे पहले अपने बिल चुकाता था, जबकि दूसरा सबसे आख़िर में।

एक डैडी का यह मानना था कि कंपनी या सरकार को आपका ध्यान रखना चाहिए और आपकी ज़रूरतों को पूरा करना चाहिए। वे हमेशा तनख़्वाह में बढ़ोतरी, रिटायरमेंट योजनाओं, मेडिकल लाभ, बीमारी की छुट्टी, छुट्टियों के दिन और बाक़ी सुविधाओं के बारे में चिंतित रहते थे। वे अपने दो चाचाओं से बहुत प्रभावित थे जो सेना में चले गए थे और बीस साल के सक्रिय जीवन के बाद उन्होंने अपने रिटायरमेंट और जीवन भर के आराम का इंतज़ाम कर लिया था। वे मेडिकल लाभ के विचार को पसंद करते थे और सेना द्वारा अपने रिटायर्ड कर्मचारियों को दी जा रही सुविधाओं की भी तारीफ़ करते थे। उन्हें विश्वविद्यालय का टेन्योर सिस्टम भी काफ़ी पसंद था। कई बार नौकरी से आजीवन मिल रही सुरक्षा और नौकरी के लाभ नौकरी से ज़्यादा महत्वपूर्ण हो जाते हैं। वे अक्सर यह कहते थे, "मैंने सरकार के लिए बहुत मेहनत से काम किया है और इसलिए बदले में मुझे ये लाभ मिलने चाहिए।"

दूसरे डैडी पूरी तरह से आर्थिक स्वावलंबन में विश्वास करते थे। वे 'सुविधाभोगी' मानसिकता के विरोधी थे। वे यह मानते थे कि इस तरह की मानसिकता लोगों को कमज़ोर और आर्थिक रूप से ज़रूरतमंद बनाती है। उनका दृढ़ विश्वास था कि आदमी को आर्थिक रूप से सक्षम होना चाहिए।

एक डैडी कुछ डॉलर बचाने के लिए परेशान रहे। दूसरे डैडी एक के बाद एक निवेश करते रहे।

एक डैडी ने मुझे बताया कि अच्छी नौकरी तलाशने के लिए अच्छा सा बायोडाटा कैसे लिखा जाए। दूसरे ने मुझे यह सिखाया कि कैसे मज़बूत व्यावसायिक और वित्तीय योजनाएँ लिखी जाएँ जिससे मैं नौकरियाँ दे सकूँ।

दो प्रभावशाली डैडियों के साथ रहने के कारण मुझे यह विश्लेषण करने का मौक़ा मिला कि उनके विचारों का उनके जीवन पर कितना प्रभाव हो रहा है। मैंने पाया कि दरअसल लोग अपने विचारों से ही अपने जीवन को दिशा देते हैं।

उदाहरण के तौर पर, मेरे ग़रीब डैडी हमेशा कहा करते थे, "मैं कभी अमीर नहीं बन पाऊँगा।" और उनकी यह भविष्यवाणी सही साबित हुई। दूसरी तरफ़, मेरे अमीर डैडी हमेशा खुद को अमीर समझते थे। वे इस तरह की बातें करते थे, "मैं अमीर हूँ और अमीर लोग ऐसा नहीं करते।" एक बड़े आर्थिक झटके के बाद जब वे दीवालिएपन की कगार पर थे, तब भी वे खुद को अमीर आदमी ही कहते रहे। वे अपने समर्थन में यह कहते थे, "ग़रीब होने और पैसा न होने में फ़र्क़ होता है। पैसा पास में न होना अस्थायी होता है, जबकि ग़रीबी स्थायी है।"

मेरे ग़रीब डैडी यह भी कहते थे, "मेरी पैसे में कोई रुचि नहीं है" या "पैसा महत्वपूर्ण नहीं है।" मेरे अमीर डैडी हमेशा कहते थे, "पैसे में बहुत ताक़त है।"

हो सकता है हमारे विचारों की ताक़त को कभी भी मापा न जा सके, या फिर उन्हें पूरी तरह से समझा न जा सके। फिर भी बचपन में ही मैं यह समझ गया था कि हमें अपने विचारों पर ध्यान देना चाहिए और अपनी अभिव्यक्ति पर भी। मैंने देखा कि मेरे ग़रीब डैडी इसलिए ग़रीब नहीं थे क्योंकि वे कम कमाते थे, बल्कि इसलिए ग़रीब थे क्योंकि उनके विचार और काम ग़रीबों की तरह थे। दो डैडी होने के कारण बचपन से ही मैं इस बारे में बहुत सावधान हो चला था कि मैं किस तरह की विचारधारा अपनाऊँ। मैं किसकी बात मानूँ- अपने अमीर डैडी की या अपने ग़रीब डैडी की?

हालाँकि दोनों ही शिक्षा और ज्ञान को बहुत महत्वपूर्ण मानते थे, परंतु क्या सीखा जाए इस बारे में दोनों की राय अलग-अलग थी। एक चाहते थे

कि मैं पढ़ाई में कड़ी मेहनत करूँ, डिग्री लूँ और पैसे कमाने के लिए अच्छी सी नौकरी ढूँढ़ लूँ। वे चाहते थे कि मैं एक पेशेवर अधिकारी, वकील या अकाउंटेंट बन जाऊँ या एम.बी.ए. कर लूँ। दूसरे डैडी मुझे प्रोत्साहित करते थे कि मैं अमीर बनने का रहस्य सीख लूँ। यह समझ लूँ कि पैसा किस तरह काम करता है और यह जान लूँ कि इससे अपने लिए कैसे काम लिया जाता है। "मैं पैसे के लिए काम नहीं करता!" इन शब्दों को वे बार-बार दोहराया करते थे, "पैसा मेरे लिए काम करता है!"

9 वर्ष की उम्र में मैंने यह फ़ैसला किया कि पैसे के बारे में मैं अपने अमीर डैडी की बात सुनूँगा और उनसे सीखूँगा। यह फ़ैसला करने का मतलब था अपने ग़रीब डैडी की बातों पर ध्यान न देना, हालाँकि उनके पास कॉलेज की बहुत सी डिग्रियाँ थीं जो मेरे अमीर डैडी के पास नहीं थीं।

रॉबर्ट फ़्रॉस्ट का सबक़

रॉबर्ट फ़्रॉस्ट मेरे पसंदीदा कवि हैं। हालाँकि मुझे उनकी बहुत सी कविताएँ पसंद हैं, परंतु *द रोड नॉट टेकन* मुझे सबसे ज़्यादा पसंद है। मैं इसकी शिक्षा का इस्तेमाल हर रोज़ करता हूँ :

द रोड नॉट टेकन

(वह राह जिसे चुना नहीं गया)

पीले जंगल में दो राहें बँटती थीं,
और अफ़सोस कि मुझे एक को चुनना था।
और मैं अकेला पथिक खड़ा रहा, देर तक
यह देखते हुए कि यह राह कहाँ तक जाती है
झुरमुटों में मुड़ने के पहले;

फिर मैंने दूसरी राह चुनी, उतनी ही सुंदर,
और शायद बेहतर भी,
क्योंकि यहाँ घास ज़्यादा थी और कम लोग गुज़रे थे
हालाँकि लोगों के गुज़रने से यहाँ भी
उतना ही नुक़सान हुआ था।

और दोनों ही उस सुबह बराबर थीं
पत्तियों पर काले क़दम नहीं थे।
और मैंने पहली को अगले दिन के लिए रखा!
पर यह जानते हुए कि किस तरह रास्ते निकलते हैं,
मुझे शक था कि मैं कभी लौटूँगा।

मैं आह भरकर यह कहूँगा
आज से सदियों बाद शायद;
एक जंगल में दो राहें बँटती थीं, और मैंने-
मैंने कम चली हुई राह को चुना,
और इसी बात से सारा फ़र्क़ पड़ा।

- रॉबर्ट फ़्रॉस्ट (1916)

और इसी बात से सारा फ़र्क़ पड़ा।

बहुत समय गुज़र चुका है, पर मैं अब भी अक्सर रॉबर्ट फ़्रॉस्ट की कविता पर चिंतन करता रहता हूँ। पैसे के बारे में अपने पढ़े-लिखे डैडी की

सलाह और नज़रिए को न सुनने का मेरा फ़ैसला दुखद था परंतु यह एक ऐसा फ़ैसला था जिसने मेरी ज़िंदगी की दिशा तय कर दी।

एक बार मैंने यह फ़ैसला कर लिया कि मुझे किसकी बात सुननी है, तो उसके बाद मेरी धन संबंधी शिक्षा शुरू हो गई। मेरे अमीर डैडी ने मुझे 30 साल से भी ज़्यादा समय तक सिखाया, तब तक जब तक कि मेरी उम्र 39 साल नहीं हो गई। और इसके बाद उन्होंने सिखाना बंद कर दिया। उन्होंने यह देख लिया था कि मैं वह सब समझ चुका हूँ जो वे मेरी मोटी बुद्धि में भरने की कोशिश कर रहे थे।

पैसा एक तरह की ताक़त है। परंतु इससे भी बड़ी ताक़त है वित्तीय शिक्षा। पैसा तो आता और जाता रहता है, परंतु अगर आप यह जानते हैं कि पैसा किस तरह से काम करता है, तो आप ज़्यादा ताक़तवर हो जाते हैं और आप दौलत कमाना शुरू कर सकते हैं। केवल सकारात्मक चिंतन से ही समस्या हल नहीं हो सकती क्योंकि ज़्यादातर लोग स्कूल में पढ़ते हैं और वहाँ वे कभी यह नहीं सीख पाते कि पैसा किस तरह से काम करता है, इसलिए वे पैसे के लिए काम करने में अपनी सारी ज़िंदगी बर्बाद कर देते हैं।

मेरी शिक्षा जब शुरू हुई थी तब मैं केवल नौ साल का था और इसी कारण मेरे अमीर डैडी ने मुझे जो पाठ पढ़ाए थे वे बहुत आसान थे। और सारी बातों को छोड़कर विचार किया जाए तो उन्होंने मुझे 30 सालों तक कुल 6 महत्वपूर्ण पाठ पढ़ाए। यह पुस्तक उन्हीं 6 पाठों के बारे में है और इसे भी उतना ही आसान बनाने की कोशिश की गई है जितना कि मेरे अमीर डैडी ने इन्हें मेरे लिए आसान बनाया था। यह पाठ आपके लिए जवाब की तरह नहीं लिखे गए हैं, बल्कि मार्गदर्शक की तरह लिखे गए हैं। ऐसे मार्गदर्शक जो ज़्यादा अमीर बनने में आपकी और आपके बच्चों की मदद करेंगे चाहे बदलती हुई इस अनिश्चित दुनिया में कुछ भी होता रहे।

सबक़ 1 : अमीर लोग पैसे के लिए काम नहीं करते

सबक़ 2 : पैसे की समझ क्यों सिखाई जानी चाहिए?

सबक़ 3 : अपने काम से काम रखो

सबक़ 4 : टैक्स का इतिहास और कॉरपोरेशन्स की ताक़त

सबक़ 5 : अमीर लोग पैसे का आविष्कार करते हैं

सबक़ 6 : सीखने के लिए काम करें – पैसे के लिए काम न करें